ISSN 2395-0315

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं का योगदान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अंशु सोनी

सहायक प्राध्यापक

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारतीय महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में योगदान माना जाता है। सदियों के शोषण और सामाजिक बेड़ियों में जकड़े होने के बाद उनके सामाजिक उत्थान की दिशा में किए गए प्रयासों को बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। ब्रिटिश सरकार और ईसाई मिशनरियों ने अपने साम्राज्यीय हितों की पूर्ति हेतु परंपरागत भारतीय समाज व्यवस्था में सुधार व आधुनिकता को प्रोत्साहन देना आरंभ किया था। 19वीं शताब्दी में बुद्धि वादी और मानवतावादी विचारों से प्रभावित होकर अनेक समाज सुधारकों जैसे राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले, गोपाल हरीदेशमुख, जस्टिस रानाडे, के.टी. तेलंग, बी.एम. मालाबारी, डी.के. कर्वे, वीरेशलिंगम व अनेक संगठनों ने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने और महिलाओं की दशा को सुधारने के लिए शक्तिशाली आंदोलन चलाए। सतीप्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह, कन्यावध, पर्दा प्रथा व देवदासी प्रथा जैसी कुरीतियों को समाप्त करने और विधवा पुनर्विवाह, स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहन देने तथा मध्यम वर्गीय महिलाओं को व्यवसाय या सरकारी सेवा में जाने के योग्य बनाने के लिए अनेक सकारात्मक कदम उठाए। इन प्रत्यनों के परिणाम स्वरूप न केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ, बल्कि उनमें स्वयं भी अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता आई।

मुख्य शब्द - राष्ट्रीय आन्दोलन, स्वतंत्रता, क्रांतिकारी।

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास स्वतंत्रता के लिए भारतीयों के संघर्ष की अद्भुत गाथा है। यद्यपि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रकृति मूलतः पुरुष प्रधान थी, तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज में महिलाओं की दुनिया घर की चारदीवारी के भीतर सीमित थी और उसे पुरुष की अनुगामिनी ही माना जाता था। फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन का इतिहास तमाम ऐसी महिलाओं के साहस, त्याग व बलिदान से भरा पड़ा है, जिन्होंने अपनी पारिवारिक भूमिका के निर्वाह के साथ ही अपनी वीरता, साहस और नेतृत्व क्षमता का परिचय देते हुए भारत की स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रीय आंदोलन में बढ़-चढ़कर भागीदारी कर। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया और भारतीय स्वतंत्रता के इतिहास के पन्नों में स्वयं को अमर कर दिया। 1857 के महान विद्रोह जिसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है, जिसने भारत में अंग्रेजी शासन की जड़ों को हिला दिया था, इसकी नायक एक महिला थी, जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया उसके लिए स्वयं अंग्रेज शासक भी प्रशंसा किए बगैर नहीं रह सके।

सर ह्यूरोज को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि "सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थी"। लखनऊ में 1857 की क्रांति का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने किया उन्होंने अंग्रेजी सेना से डटकर मुकाबला किया। वस्तुतः इतिहास के पन्नों में ऐसी अनगिनत कहानियां दर्ज है, जहां वीरांगनाओं ने अपने साहस और वीरता के बल पर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए। उनमे प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है- वीरांगना झलकारी बाई के नेतृत्व में गठित 'दुर्गा दल', वीरांगना रहीमी, उदादेवी, आशादेवी, नर्तकी हैदरी बाई, तुलसीपुर की रानी ईश्वर कुमारी, अवध की बेगम आलिया, कानपुर की नर्तकी अजीजन बेगम के नेतृत्व में बनी मस्तानी टोली, मस्तानी बाई, महावीरी देवी, चौहान रानी, रामगढ़ की रानी अवंती बाई लोधी, धार की रानी द्रोपदी बाई इत्यादि भारतीय महिलाओं ने अपने त्याग, वीरता और बलिदान से यह सिद्ध किया कि महिलाएं किसी प्रकार से पुरुषों से कमजोर नहीं है। यद्यपि 1857 के विद्रोह में शामिल अधिकांश महिलाएं राज परिवार या अभिजन वर्ग से संबंधित थी, जिन्होंने अपने व्यक्तिगत हितों पर आंच आने पर ही अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया था, फिर भी इससे महिलाओं की अदम्य इच्छाशक्ति और वीरत्व संदेह से परे है।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। अब महिलाएं अपनी घरेलू भूमिका का निर्वहन करते हुए आंदोलन में भागीदारी करने लगी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों में महिलाएं पुरुषों की भांति भाग लेने लगी थी। 1890 में भारतीय महिला उपन्यासकार स्वर्णकुमारी घोषाल तथा ब्रिटिश साम्राज्य की पहली महिला स्नातक कादंबरी गांगुली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशन में प्रतिनिधि के तौर पर शामिल हुई थी। वही सावित्रीबाई फुले और पंडिता रमाबाई जैसी कुछेक महिलाएं भी थी, जिन्होंने खुलकर आपैनिवेशक पितृसत्तात्मकता पर प्रहार किया।

1905-06 के बंगाल विभाजन विरोधी आंदोलन में बड़ी संख्या में महिलाओं ने सार्वजनिक रूप से भाग लिया पत्र-पत्रिकाओं, सभाओं और महिला संगठनों के माध्यम से अनेक महिलाओं को आंदोलन में सहभागिता हेतु प्रेरित किया गया। स्वदेशी और बहिष्कार के इस आंदोलन में शहरी मध्यमवर्ग की सदियों से घर की चारदीवारी में कैद महिलाएं जुलूसों और धरनो में शामिल हुयी। ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए महिलाओं ने विदेशी सामानों का बहिष्कार किया अपनी कांच की चूड़ियां तोड़ डाली और प्रतिरोध के अनुष्ठान में रसोई बंदी दिवस मनाया। महिलाओं ने 'स्वदेशी मेला' लगाना शुरू किया। सरलादेवी चौधरानी, स्वामी श्रद्धानंद की पुत्री वेद कुमारी और आज्ञावती ने महिलाओं को संगठित कर विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

1917 में कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष एनी बेसेंट के अलावा सरोजिनी नायडू और बी अम्मा शामिल थी। इसी अधिवेशन में कांग्रेस ने महिलाओं के लिए शिक्षा और निर्वाचित संस्थाओं में प्रतिनिधित्व की मांग की थी। इसके पश्चात् 1918 में सरोजनी नायडू ने कांग्रेस अधिवेशन में स्त्री पुरुषों के लिए मताधिकार की समान योग्यता की मांग हेतु प्रस्ताव रखा। विभिन्न महिला संघों, कांग्रेस व महिला प्रदर्शनकारियों की मांग के कारण ही 1919 के भारत सरकार अधिनियम में महिलाओं को सीमित मताधिकार प्राप्त हुआ। 1919 के बाद महिलाएं राजनीतिक जुलूसों में चलने लगी,

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और शराब की दुकानों पर धरना देने लगी खादी बुनने तथा उसके प्रचार का कार्य करने लगी। विशेषतः महात्मा गांधी ने महिलाओं को राष्ट्रीय आंदोलन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया। गांधीजी जानते थे कि राष्ट्रीय आंदोलन को सच्चे अर्थों में जन आंदोलन बनाने के लिए उसमें महिलाओं की व्यापक भागीदारी बहुत आवश्यक है। 1919 में रौलट एक्ट का विरोध करने के लिए गांधी जी के आवाहन पर सभी वर्गों व समुदायों की महिलाएं सत्याग्रह में शामिल हुयी।

गांधी जी के प्रयासों से असहयोग आंदोलन के दौरान देश के विभिन्न भागों में महिलाओं ने प्रदर्शनों, जुलूसों और सभाओं में भाग लिया, चरखा चलाने व खादी जैसे रचनात्मक कार्यों को अपनाया और सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार किया। शराब की दुकानों पर धरना देकर कानून तोड़कर जेल गयी और पुलिस की लाठियां तक खाई। नवंबर 1921 में महिलाओं ने अपने जोरदार विरोध प्रदर्शन से प्रिंस आफ वेल्स का स्वागत किया। असहयोग आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लेने वाली कमला देवी चट्टोपाध्याय ने बर्लिन में अंतर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व कर तिरंगा फहराया। दुर्गाबाई देशमुख, कस्तूरबा गांधी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, सरोजिनी नायडू, उमा नेहरू और कमला नेहरू इस आंदोलन में सक्रिय रही। 1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अरूणा आसफ अली जैसी महिलाएं राष्ट्रीय रंगमंच पर तेजी से उभरी। सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान अकेले दिल्ली में लगभग 1600 महिलाओं ने अपनी गिरफ्तारी दी।

'भारत छोड़ो आंदोलन' में महिलाओं ने भारतीय स्वतंत्रता के अनुशासित सिपाही की तरह अपनी भूमिका निभाई। गांधीजी ने 'करो या मरो' का नारा दिया और महिलाओं की विशेष भागीदारी पर जोर दिया। आंदोलन शुरू होते ही गांधी सहित तमाम कांग्रेसी नेताओं की गिरफ्तारी के बाद आंदोलन को चलाने की जिम्मेदारी महिलाओं ने स्वयं संभाली। महिलाओं ने व्यापक स्तर पर धरने प्रदर्शन किये, हड़ताले की, सभाएं की और कानून तोड़े। इन महिलाओं में कबकलता बरुआ, सुचेता पलानी, सरोजिनी नायडू, पद्मजा नायडू, उषा मेहता, अरूणा आसफ अली, इंदिरा प्रियदर्शिनी, विजयलक्ष्मी पंडित, कस्तूरबा गांधी, डॉ. सुशीला नैयर, मातंगिनी हाजरा आदि प्रमुख थी। इस आंदोलन की महत्वपूर्ण विशेषता शहरी क्षेत्रो के साथ ही ग्रामीण स्त्रियों की व्यापक सहभागिता थी। 1930 में दांडी में पुरूषों के बाद महिलाओं ने अपनी भूमिका निभाई, किन्तु 1942 के आंदोलन में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

जहां एक और गांधी जी के नेतृत्व में अनेक देशभक्त महिलाएं राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल थी वहीं दूसरी ओर देश के प्रायः सभी भागों में क्रांतिकारी गतिविधियों में महिलाएं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थी। क्रांतिकारी महिलाएं क्रांतिकारियों को शरण देने, संदेश पहुंचाने और हथियारों की रक्षा करने से लेकर बंदूक चलाने में भी प्रवीण थी। इन क्रांतिकारी महिलाओं में प्रमुख रूप से श्रीमती ननीवाला, सुशीला दीदी, दुर्गा देवी बोहरा, लतिका घोष, प्रीति लता वाडेकर, कल्पना दत्त, वीना दास सुहासिनी अली तथा रेणु सेन का नाम लिया जा सकता है।

राष्ट्रीय आंदोलन में जहां भारतीय महिलाएं सक्रिय थी वहीं भारतीय संस्कृति से प्रभावित होकर अनेक विदेशी महिलाओं ने भी भारत की राष्ट्रीय आंदोलन में अपने प्राणों को दाव पर लगाया। इनमें एनी बेसेंट, मैडम भीकाजी, कामा ,सिस्टर निवेदिता, मेडलिन स्लेड (मीराबेन), नेली सेनगुप्ता आदि विशेष उल्लेखनीय है।

ISSN 2395-051X

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं ने देशभक्ति, विदेशी शासन से मुक्ति के भाव से ओत प्रोत होकर राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह किया बावजूद इसके कि पितृसत्तात्मक समाज में उनसे स्त्रीयोचित व्यवहार की ही अपेक्षा की जाती थी। उन्होंने अपनी घरेलू व सार्वजनिक जीवन की जिम्मेदारियों को एक साथ निभाया। यहां यह उल्लेखनीय है कि महिलाओं के अधिकारों और राष्ट्रीय आंदोलन में उनकी भागीदारी में कोई सीधा संबंध नहीं था। अपने देश व मातृभूमि से अत्यंत प्रेम के कारण महिलाएं स्त्री मुक्ति को विशेष प्रमुखता न देकर राजनीतिक मुक्ति के लिए संघर्ष करती रही। फिर भी, स्वाधीनता आंदोलन के दौरान भारत की महिलाओं ने पहली बार समानता और स्वतंत्रता के मूल्यों को जाना और समझा। सरला देवी चौधरानी, सरोजिनी नायडू, सुचेता पलानी जैसी महिलाओं ने राजनीतिक मुक्ति के साथ-साथ मताधिकार, समान अधिकार, चुनावी राजनीति में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका के लिए भी संघर्ष किया। किंतु राष्ट्रीय आंदोलन और इसके नेताओं ने कभी लैंगिक समानता जैसे मुद्दे नहीं उठाए और ना ही पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दी। 1947 में भारत को राजनीतिक मुक्ति तो मिल गई, किंतु कुछ राष्ट्र वादियों की पुरुषवादी मानसिकता के कारण महिला उद्धार के प्रश्नों को अपेक्षित महत्व नहीं मिल सका। राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं के सशक्त और प्रभावशाली योगदान के बाद भी पुरुषों की महिलाओं के प्रति परंपरावादी सोच में कोई परिवर्तन नहीं आया। इस प्रकार महिलाओं ने सांस्कृतिक और पितृसत्ता की जकड़न के बावजूद राष्ट्रीय आंदोलन में पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर अपनी हिस्सेदारी का निर्वाह किया।

संदर्भ -

1. Tarachand, History of the freedom movement in India, 1961.
2. S.B. Chaudhary Theories of the Indian Mutiny 1857
3. Sumit Sarkar, Modern India 1885-1947, Delhi 1983
4. RC Majumdar The Scpoy Mutiny and the revolt, 1857
5. Harprasad Chattopadhyaya The scpoy mutiny - A Social study and Analysis, Calcutta, 1957
6. A. R. Desia Social Background of Indian Nationalism, Bombay, 1959
7. BL Gover British Policy towards Indian Nationalism 1885-1909, Delhi 1967
8. Bipin Chandra Indian National Movement : Long Term Dynamics, New Delhi 1988
9. Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education Vol. 12, Issue No. 02 January-2017 ISSN 2230-7540

❖ ❖ ❖